दीपावली के विषय में

गुरुवार, ९ नवम्बर – सोमवार, १३ नवम्बर २०२३

[भारत में गुरुवार, ९ नवम्बर – मंगलवार, १४ नवम्बर २०२३]

फाल्गुनी फ़्रीमॅन द्वारा लिखित

प्रकाश का उत्सव, 'दीपावली' पूरे भारत में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, हर्षोल्लास से भरा और लोकप्रिय पर्व है। संस्कृत में 'दीप' का अर्थ है, 'दीपक' या 'दिया' और 'आवली' का अर्थ है, 'पंक्ति'। अतः दीपावली यह नाम, मिट्टी के छोटे-छोटे दीपों की पंक्तियों को दर्शाता है जो इस पर्व पर घरों, मन्दिरों व गलियों में जलाए जाते हैं।

दीपावली-पर्व, पाँच दिनों के दौरान एक क्रम में मनाए जाने वाले उन पाँच उत्सवों को दर्शाता है जो भारतीय पंचांग के अनुसार सामान्यतः आश्विन व कार्तिक महीनों में आते हैं जो कि पश्चिमी कैलेन्डर के अनुसार अक्टूबर और नवम्बर के माह हैं। इस समय मानसून की वर्षा के बाद भारत में मोगरा, गेन्दा और रजनीगन्धा के ख़ूब सारे फूल खिले होते हैं जो अपनी सुन्दरता और ख़ुशबू की मधुरता बिखेर रहे होते हैं। मन्द-मन्द बहने वाली वायु शीतल और सुखद होती है। इस सुन्दर मौसम के आगमन के साथ लोग उत्साहपूर्वक दीपावली मनाने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस वर्ष, २०२३ में दीपावली का पर्व गुरुवार, ९ नवम्बर को आरम्भ होगा और सोमवार, १३ नवम्बर को [और भारत में कुछ स्थानों पर मंगलवार, १४ नवम्बर को] इसका समापन होगा।

दीपावली, अन्धकार पर प्रकाश की, अज्ञान पर ज्ञान की और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। पंचांग के अनुसार यह त्यौहार कृष्णपक्ष की द्वादशी के दिन 'गोवत्स द्वादशी' के साथ आरम्भ होता है। इसके बाद त्रयोदशी को 'धनतेरस' और चतुर्दशी को 'नरक चतुर्दशी' का पर्व मनाया जाता है। और अमावस्या के दिन दीपावली के साथ इस त्यौहार का समापन होता है। भारत के कई भागों में और विश्वभर में जहाँ भारतीय मूल के वासी हैं, वहाँ दीपावली के अगले दिन नववर्ष मनाया जाता है जिसे 'बलिप्रतिपदा' भी कहते हैं।

अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होता यह दिन-प्रतिदिन का क्रम, एक वर्ष के समापन का और दूसरे वर्ष के आरम्भ का उत्सव है। वर्ष का पहला दिन, शुक्लपक्ष का दिन है। दीपावली और नववर्ष, पूर्णता

अथवा समापन एवं नवीन आरम्भों के अवसर हैं; यह कृतज्ञता अर्पित करने, सुख-समृद्धि का आवाहन व सम्मान करने और लोगों में सौहार्द का विकास करने का समय है।

***

बचपन में जब मैं महाराष्ट्र में रहा करती थी, तब मैं अपनी दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई जी और अपने चचेरे भाई-बहनों के साथ एक ही घर में रहती थी, जैसा कि भारत में हुआ करता था। दीपावली के समय हम बच्चों की ख़ूब चहल-पहल होती, सभी नए कपड़े और पटाख़े खरीदने के लिए उत्सुक रहते, और हमारी माताएँ विपुल मात्रा में मिठाइयाँ और पकवान बनाने में जुट जाया करतीं। मुझे याद है बड़े-बड़े डब्बे त्यौहार पर बनने वाली मिठाइयों से भरे होते थे : बेसन के लड्डू, नारियल की बर्फ़ी, चकली, सेव और भी बहुत कुछ। हाँलाकि मुझे और मेरे सभी भाई-बहनों को हिदायत दी जाती थी कि हम त्यौहार शुरू होने से पहले इसमें से कुछ न खाएँ, फिर भी हम चुपके-से रसोईघर में घुसकर मिठाइयों पर अपना हाथ साफ़ कर ही लिया करते थे, यह सोचकर कि हम पकड़े नहीं जाएँगे. . .! गहराई में बैठी इन स्मृतियों को याद कर मुझे लगता है कि विश्व के कई लोगों की ही तरह दीपावली मेरे पसन्दीदा त्यौहारों में से एक है क्योंकि यह लोगों से जुड़ने और प्यार से जीवन का उत्सव मनाने की मेरी मानवीय इच्छा को पोषित करता है। और यह त्यौहार इन पाँच दिनों के दौरान व इसके कुछ दिनों पहले से ही लोगों को साथ लाकर यह कार्य बड़ी सुन्दरता से करता है।

अपने जीवन में मैंने पुस्तकों, नाटकों, भजनों और महाकाव्य रामायण की कहानियों द्वारा दीपावली के कई पहलुओं के पीछे के अर्थ के बारे में सीखा है। मैंने यह भी जाना कि दीपावली, प्रचुरता की देवी, भगवती श्रीमहालक्ष्मी के समस्त रूपों की आराधना कर सुख-समृद्धि का आवाहन करने का समय है। इस पर्व में अन्य कई धागे गुँथे हुए हैं और हर धागा मिलकर दीपावलीरूपी वस्त्र को बुनने में मदद करता है।

आइए, मैं आपको इनमें से कुछ धागों के बारे में बताती हूँ जो कि इन पाँच दिनों के दौरान सभी के मानस-पटल पर उभरते हैं।

***

‘शुचिता’ यानि ‘स्वच्छता’ का बड़ा महत्त्व है, अपने घर व अपनी सत्ता में देवी महालक्ष्मी का स्वागत करने की तैयारी करते समय यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। त्यौहार शुरू होने से पहले, हर कोई अपने-अपने

घर को एकदम साफ़ करने का भरसक प्रयास करता है। बाह्य रूप से की गई यह सफ़ाई, आन्तरिक सफ़ाई की द्योतक है जिसमें आप किसी अन्य व्यक्ति के प्रति अपने मन व हृदय से कड़वाहट या वैरभाव को धो डालते हैं।

***

'सौहार्द' यानि 'मैत्रीभाव और सद्भाव' दीपावलीरूपी वस्त्र में गहराई से बुना और रचा-बसा एक मुख्य धागा है। त्यौहारों के दिनों में, पारम्परिक तौर पर लोग घर पर बनी मिठाइयाँ और उपहार, एक-दूसरे को देते और स्वीकार करते हैं। इसके पीछे का भाव यह होता है कि सबकी ओर अच्छाई और सद्भावना का हाथ बढ़ाना। देना और लेना, दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों को गहरा बनाने के तरीक़े हैं।

***

'धर्म' वह अनिवार्य गुण है जिसके बारे में आप, अधर्मी व दम्भी राक्षसराज रावण पर भगवान श्रीराम की विजय से सीख सकते है। दीपावली के पर्व पर, कई रूपों में, रामायण से भगवान श्रीराम की कहानियाँ याद की जाती हैं और नाट्य-कथाओं में उनका अभिनय भी किया जाता है; मुझे ये कहानियाँ हमेशा से धर्म के मार्ग पर चलने और कठिनाइयों में भी सही कार्य करते रहने का स्मरण कराती हैं। ये कहानियाँ दर्शाती हैं कि धर्म पर चलने से आप अपनी दिव्यात्मा से जुड़ सकते हैं और धर्म-मार्ग पर चलकर आप अपने आस-पास प्रेम का प्रकाश फैलाते हैं।

***

'शुभ संकल्प'—दीपावली पर स्वच्छता बनाए रखने, सौहार्द स्थापित करने और धर्म का पालन करने से 'शुभ संकल्प' स्वयं ही सम्मिलित हो जाता है। सिद्धयोग की सिखावनियों का अध्ययन करने से मैंने सीखा है कि मैं अपने मन में जो भाव सँजोती हूँ, उनमें यह शक्ति होती है कि वे मेरे जीवन में प्रकट हों, इसीलिए यह अनिवार्य है कि मैं अपने मन व हृदय में शुभ संकल्प बनाऊँ व धारण करूँ।

***

‘बाहुल्य’ या ‘श्री’—प्रचुरता दीपावली का अति विशेष गुण है। बाह्य व आन्तरिक स्वच्छता पर केन्द्रण करने से आप अपने हृदय में स्थान बनाते हैं जिससे कि आप दूसरों के साथ सौहार्द बनाए रख सकें और इससे आप बाहुल्य प्राप्त करने के लिए ग्रहणशील होते हैं जिसे ‘श्री’ से दर्शाया जाता है। ‘श्री’ महालक्ष्मी का ही एक अन्य नाम है। ऐसा कहा जाता है कि जहाँ सद्‌गुणों का वास होता है, वहाँ ‘श्री’ का निवास होता है।

***

‘प्रकाश’ दीपावली में समाहित है, इसीलिए इसे प्रकाश का पर्व कहा जाता है। दीपावली पर आप आत्मा का प्रकाश बिखेरते हैं जो समस्त सृष्टि को आलोकित करता है। सिद्धयोग पथ पर हम ‘ज्योत से ज्योत जगाओ’ आरती गाकर दिव्य प्रकाश का आवाहन कर सकते हैं। आरती में हम अपनी श्रीसद्‌गुरु से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने प्रकाश से हमारे अन्तर-प्रकाश को जगाएँ और हमारी सत्ता से अज्ञान के अन्धकार को मिटाएँ।

अब मैं दीपावली त्यौहार के पाँच दिनों एवं नववर्ष के महत्त्व का वर्णन करती हूँ।

***

गोवत्स द्वादशी

गुरुवार, ९ नवम्बर, २०२३

उत्सवों में प्रकृति को सम्मिलित करना व उसका सम्मान करना, भारत के त्यौहारों का अभिन्न अंग है। दीपावली पर्व का प्रथम दिन है, ‘गोवत्स द्वादशी’ जो गौओं की पूजा-अर्चना करने के लिए समर्पित है। गौओं को सत्त्वगुण से जोड़ा गया है जो शुद्धता और अच्छाई का गुण है। गोवत्स द्वादशी के दिन गौओं और उनके बछड़ों की पूजा की जाती है। इस त्यौहार का उद्‌गम पुराणों में वर्णित समुद्र-मन्थन की कथा में मिलता है। कथा के अनुसार, अमृत पाने के लिए देवताओं और दानवों ने विशाल समुद्र का मन्थन किया। मन्थन के समय, समुद्र से दिव्य कामधेनु गाय प्रकट हुई। कामधेनु मातृत्व, उर्वरता, दिव्यता व पालन-पोषण के आशीर्वादों से जुड़ी है।

दीपावली की एक और याद जो मेरे मन के निकट है, वह है, सुन्दर सजी गौशालाओं में जाना जिन्हें साफ़ कर, आम के पत्ते व गेन्दे के फूलों के तोरण लगाकर सजाया जाता था। हमारे परिवार के सभी सदस्य जैसे ही गौशाला में प्रवेश करते, हम सब बच्चे तुरन्त गायों और बछड़ों के पास जाकर उन्हें सहलाने लगते और उन्हें ढेर सारा प्यार करते। फिर हमारे माता-पिता व बड़े-बुज़ुर्ग हल्दी, कुमकुम, अक्षत और फूल चढ़ाकर उनकी पूजा करते। वे गायों और बछड़ों की आरती करते और फिर उन्हें हरी घास, अंकुरित मूँग और चना खिलाते। यह हमेशा ही उल्लसित करने वाला उत्सव होता था।

इस दिन, जो लोग स्वयं उपस्थित रहकर गायों की पूजा नहीं कर पाते, वे गायों की तस्वीर की पूजा करते हैं।

***

धनतेरस

शुक्रवार, १० नवम्बर, २०२३

'धनतेरस', त्रयोदशी का दिन है जब धन-समृद्धि व प्रचुरता का उत्सव मनाया जाता है। मेरे घर पर यह दिन बहुत व्यस्तता और तैयारियों से भरा होता था। घर पर किसी भी स्थान पर अब भी यदि कोई काम करने की ज़रूरत होती तो वहाँ साफ़-सफ़ाई पूरी कर दी जाती और हम यह सुनिश्चित कर लेते कि ढेर सारी मिठाइयाँ और पकवान बने हैं। मैं और मेरी बहन अच्छी तरह से आँगन की सफ़ाई करते और अपने मनपसन्द नामसंकीर्तन, जैसे 'श्रीराम जय राम जय जय राम' और 'राम कृष्ण हरि मुकुन्द मुरारि' गाते-गाते कई कलाकृतियाँ बनाकर बड़ी-सी रंगोलियाँ सजाते।

रंगोली, जैसा कि इन्हें उत्तर भारत में कहा जाता है, चावल के आटे, चूना पत्थर या संगमर्मर के रंग-बिरंगे पाउडर से बनाई गई आकृतियाँ हैं; ये आकृतियाँ तिकोनी, चौकोर, चतुर्भुज, गोलाकार या इन आकारों को मिला-जुलाकर बनाई जा सकती हैं। दक्षिण भारत में इस कला को 'कोलम' कहते हैं।

यह सुन्दर और आसानी से मिटने वाली चित्रकारी किसी विशिष्ट स्थान पर प्रचुरता, समृद्धि, सुख व आरोग्य का स्वागत करने के लिए बनाई जाती है। 'मण्डल' के गोलाकार में बनाई गई रंगोली इस जगत की ब्रह्माण्डीय शक्ति का प्रतीक है जबकि कमल की आकृतियाँ चैतन्य शक्ति को दर्शाने के लिए जानी जाती हैं।

दीपावली जैसे शुभ अवसर पर जब आने वाले मेहमान दरवाज़े के सामने बनी इन सुन्दर और रंग-बिरंगी रंगोली के पास से होकर अन्दर आते हैं तो वे इस पावन आकृति के सकारात्मक स्पन्दनों को अपने साथ घर के भीतर ले आते हैं। देवी महालक्ष्मी और अन्य देवी-देवताओं का स्वागत करने के लिए भी रंगोली एक शुभ माध्यम है जिससे देवी-देवता अपने साथ घर में सौभाग्य व सुख-समृद्धि लाते हैं।

चूँकि पंचांग के अनुसार धनतेरस तेरहवाँ दिन है, इसलिए इस दिन सन्ध्या-समय तेरह दीप प्रज्वलित करके देवी महालक्ष्मी और भगवान कुबेर की पूजा करने की परम्परा है। भगवान कुबेर देवताओं के कोशाधिपति और धन-सम्पदा के देवता हैं। श्रीगुरुगीता में सिखाया गया है कि मानव-जीवन के चार लक्ष्य हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।[१] 'अर्थ' यानि धन की प्राप्ति के लिए गृहस्थजन भगवान कुबेर एवं देवी महालक्ष्मी की पूजा करते हैं।

धनतेरस के दिन, भारत के बाज़ारों में ख़ूब भीड़-भाड़ होती है, लोग स्वर्ण व क़ीमती धातु खरीदते हैं जो प्रचुरता और धन-समृद्धि के प्रतीक हैं। चूँकि यह मान्यता है कि इस दिन प्रचुरता का आवाहन करना चाहिए और धन-सम्पदा का उपयोग सर्वोच्च कार्य के लिए करना चाहिए, इसलिए इस दिन स्वर्ण-मुद्राओं या सुनहरे रंग के फूलों, फलों और वस्त्रों के रूप में श्रीगुरु को स्वर्ण अर्पित करने की परम्परा है। स्वर्ण अर्पित करने के प्रतीकात्मक रूप में सिद्धयोगी दक्षिणा अर्पित करते हैं।

***

नरक चतुर्दशी

शनिवार, ११ नवम्बर, २०२३

[भारत में रविवार, १२ नवम्बर, २०२३]

चतुर्दशी के इस दिन भगवान श्रीकृष्ण के नरकासुर पर विजय का उत्सव मनाया जाता है। नरकासुर स्वयं को अजेय मानता था। श्रीमद्भागवतम् के अनुसार, अपनी मृत्यु से पूर्व नरकासुर को अपने व्यवहार का पश्चात्ताप हुआ और उसने भगवान श्रीकृष्ण व उनकी भार्या, सत्यभामा से प्रार्थना की कि वे उसके नाम पर एक त्यौहार रखें जो लोगों को स्मरण कराए कि अहंकार, अभिमान और स्वार्थ, व्यक्ति

को भ्रमित कर धार्मिक कृत्यों के लाभों से दूर ले जा सकता है। उसे ऐसा ही वरदान मिला और 'नरक चतुर्दशी' का त्यौहार मनाया जाने लगा।

***

दीपावली

रविवार, १२ नवम्बर, २०२३

त्यौहार के चौथे दिवस को 'दीपावली' या 'दिवाली' कहा जाता है। [चूँकि इस वर्ष १२ नवम्बर को दो तिथियाँ एक-साथ हैं, इसलिए दीपावली और नरक चतुर्दशी भारत में एक ही दिन मनाई जा रही हैं।]

रामायण के अनुसार इस दिन भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास समाप्त कर और दैत्यराज रावण पर विजय प्राप्त कर अपने राज्य, अयोध्या वापस आए थे। जब अयोध्यावासियों ने सुना कि उनके परम प्रिय महाराज अमावस्या की रात्रि को लौट रहे हैं तो इसका आनन्दोत्सव मनाने के लिए सभी लोगों ने, मिट्टी के दियों से भगवान श्रीराम का मार्ग प्रकाशित कर दिया था—पूरी अयोध्यानगरी को दियों से सजा दिया गया था।

दीपावली के दिन अन्धकार पर प्रकाश की विजय का उत्सव मनाया जाता है। कई तरीक़ों से यह द्वन्द हममें से हरेक के अन्दर चलता रहता है : सकारात्मक लक्ष्य नकारात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिरोध करते हैं, सही व भली समझ प्रतिरोध करती है ग़लत समझ का तथा उदार भावनाएँ प्रतिरोध करती हैं स्वार्थी प्रवृत्तियों का। जब आप मन का शुद्धीकरण करने के लिए सिद्धयोग के अभ्यास करते हैं, तब आप अपने हृदय-प्रकाश को दमकने देते हैं और नकारात्मक शक्तियों को कम करते हैं। ऐसा करने से आप अपने सदयतापूर्ण शब्दों, उदार कृत्यों और कृतज्ञता की अभिव्यक्तियों द्वारा प्रकाश फैलाकर अपने मन को प्रदीप्त करते हैं—और अपने हृदय को भी!

एक अन्य व्यापक परम्परा के अनुसार, इस दिन भगवान विष्णु का विवाह देवी महालक्ष्मी से होता है, इसलिए सन्ध्या के समय देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। हर परिवार की अलग-अलग परम्परा के अनुसार हर पूजा की विधि थोड़ी अलग होती है। हमारे घर में पूजा का कमरा सुन्दर फूलों, तोरण और फूलमालाओं से सजाया जाता था। देवी महालक्ष्मी को दर्शाने वाली सभी सामग्रियों जैसे कि बही-खाता, आभूषण, चाँदी के सिक्के इत्यादि को चाँदी की थाली पर सजाकर उनकी पूजा की जाती थी। हम लोग पूजा के लिए बनाए गए सभी पकवानों और फलों का नैवेद्य अर्पित कर श्रीमहालक्ष्म्यष्टकं

स्तोत्रम् गाते और फिर आरती करके समापन करते थे। गाते समय पूरा घर प्रकाश व सौन्दर्य से भर जाता था। अब भी मैं अपनी आँखें बन्द करके इस रात्रि की ओजस्विता को और इसने मुझे भगवान का जो अनुभव दिया है, उसे याद कर सकती हूँ।

सिद्धयोग पथ पर, हम कुण्डलिनी शक्ति के एक रूप में देवी महालक्ष्मी की पूजा करते हैं और हम देवी से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें आन्तरिक व बाह्य, दोनों ही प्रकार की समृद्धि प्रदान करें जिससे हम एक सुन्दर विश्व की रचना कर सकें।

***

नूतन वर्षाभिनन्दन

सोमवार, १३ नवम्बर, २०२३
[भारत में मंगलवार, १४ नवम्बर, २०२३]

भारत के कुछ भागों में दीपावली के अगले दिन नूतन वर्ष मनाया जाता है जिसे 'बलिप्रतिपदा' भी कहते हैं। श्रीमद्‌भागवतम् के अनुसार, राजा बलि शूरवीर, धर्मपरायण और उदार राजा थे जो भगवान विष्णु के भक्त थे। तथापि, समय के साथ, राजा बलि को अपने हृदय की उदारता पर अभिमान हो गया और वे दम्भी हो गए। एक बार वे यज्ञ कर रहे थे जिससे वे देवलोकों में विद्यमान देवों से भी अधिक शक्तिशाली बन जाएँ। बलि से भयभीत होकर देवतागण सहायता माँगने के लिए भगवान विष्णु के पास गए। भगवान ने देवताओं की पुकार पर वामन अर्थात् छोटे क़द वाले ब्राह्मण बालक का अवतार धारण किया और यज्ञ में उपस्थित हो गए।

जब राजा बलि ने इस ब्राह्मण बालक को यज्ञवेदी की ओर आते देखा, तो उन्होंने बड़े आदर से उसका स्वागत किया और पूछा कि वे उस बालक के लिए क्या कर सकते हैं। वामन ने उनसे उतनी भूमि माँगी जितनी वे अपने तीन पग से नाप सकें। बालक की इतनी छोटी-सी इच्छा सुनकर राजा आश्चर्यचकित हो गए किन्तु अन्त में उन्होंने वामन की इच्छा पूरी करने की प्रतिज्ञा ली। तत्क्षण वामन ने विस्तृत होकर विश्वात्मस्वरूप धारण कर लिया। एक पग में उन्होंने धरती नाप ली और दूसरे पग में शेष ब्रह्माण्ड। फिर वामन ने राजा बलि से पूछा कि अब वे तीसरा पग कहाँ रखें। राजा बलि यह समझ गए कि उनके समक्ष जो खड़े हैं वे स्वयं भगवान हैं, इसलिए उन्होंने विनम्रतापूर्वक अपना सिर आगे कर दिया जिससे वामन अपना पाँव उनके सिर पर रख सकें। और, वामन ने राजा बलि के सिर पर अपना पाँव रखा व उन्हें

पाताल भेज दिया। परन्तु दान देने की अपनी प्रतिज्ञा पर डटे रहने के पुण्यकर्म और भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण के कारण, राजा बलि को पूजे जाने के लिए धरती पर वापस आने का वरदान मिला। यह दिन 'बलिप्रतिपदा' यानि राजा बलि के पद के नाम से जाना गया, यह वर्ष के सबसे मंगलमय साढ़े तीन दिनों में से एक है और यही नववर्ष का पहला दिन है।

यह दिन नए आरम्भों की स्फूर्तिदायक शक्ति से परिपूर्ण होता है। यह नववर्ष के अपने उद्देश्यों व संकल्पों को नया रूप देने का समय है और साथ ही मित्रता को नवीन करने व मतभेदों को दूर करने का भी समय है। इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं, उपहारों व मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं और अपने बड़े-बुज़ुर्गों से आशीर्वाद लेते हैं। व्यापारी नए बही-खाते बनाकर देवी महालक्ष्मी के आगमन का स्वागत करते हैं। इस प्रकार नए बही-खाते बनाने से श्रीमहालक्ष्मी के आगमन के लिए स्थान बन जाता है।

परम्परागत तौर पर, लोग इस दिन उन कामों को करते हैं जिन्हें वे पूरे वर्ष करना चाहते हैं। सिद्धयोग पथ पर हम अपनी साधना के प्रति वचनबद्ध रहने का संकल्प लेकर, सिद्धयोग के अभ्यासों को करके और श्रीगुरु की कृपा व उनकी सिखावनियों के लिए, उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित करके नूतन वर्ष का उत्सव मनाते हैं। दीपावली का त्यौहार हमारे अन्तर के परम प्रकाश का सम्मान करने और इस प्रकाश को सबके साथ बाँटने का समय है। यह प्रचुरता का आवाहन करने और इस प्रचुरता को सबके साथ बाँटने का समय है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१] श्रीगुरुगीता, 'स्वाध्याय सुधा' आरम्भिक श्लोक [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०२३] पृ. २८।